8/11/2001

कश्मीर पर रूस जैसा दमदार समर्थन किसी ने नहीं दिया

वाजपेयी ने अमेरिका व पश्चिम देशों को आड़े हाथ लिया

■ आलोक मेहता

मॉस्को, 7 नवंबर। प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कश्मीर मसले पर अमेरिका और पश्चिमी देशों के नजरिये की अप्रत्यक्ष तौर पर आलोचना करते हुए कहा कि इस मसले पर भारत को रूस जैसा दमदार समर्थन किसी और से नहीं मिला, इसके बजाय इन देशों ने 'बंदर-बांट' की नीति अपना रखी है। इसके साथ ही वाजपेयी ने रूस समेत तमाम देशों के आग्रह को ठुकराते हुए न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा के दौरान पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल परवेज मुशर्रफ से मुलाकात करने से फिर इनकार कर दिया। वाजपेयी ने अपनी रूस यात्रा को पूरी तरह सफल बताते हुए कहा कि कश्मीर मसले पर हमें रूस की तरह किसी और ने समर्थन नहीं दिया। इसी कड़ी में उन्होंने दो चिट्ठियों और एक बंदर की चर्चित कहानी सुनाई।

- ये देश बंदर-बांट की नीति अपना रहे हैं
- जनरल मुशर्रफ से मिलने से फिर इनकार किया
- पुतिन ने अगले वर्ष भारत आने का न्यौता स्वीकारा

भारतीय समुदाय के लोगों के साथ चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि रूस के राष्ट्रपति व्लादीमिर पुतिन ने अगले वर्ष भारत आने का उनका निमंत्रण स्वीकार कर लिया है। रूस और भारत की दोस्ती का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि सरकारें बदल सकती हैं लेकिन दोनों देशों के लोगों के दिलों में एक-दूसरे के प्रति प्रेम बना रहेगा।

इससे पूर्व वाजपेयी ने अपनी चार दिवसीय रूस यात्रा के अंत में संवाददाताओं से चर्चा करते हुए कहा कि निकट भविष्य में पाकिस्तान के साथ बातचीत की दोबारा शुरुआत या जनरल मुशर्रफ के साथ मुलाकात तब तक नहीं होगी जब तक पाकिस्तान सीमा पार आतंकवाद बंद करके अच्छा माहौल नहीं बनाता। एक अन्य सवाल के जवाब में प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत पाकिस्तान से बातचीत करने के लिए हमेशा तैयार रहा है, लेकिन इसके लिए वातावरण सही होना चाहिए और एक कार्यसूची भी होनी चाहिए। हमने तो हमेशा बातचीत के प्रयास किए। लाहौर के बाद कारगिल हुआ, फिर भी हमने बातचीत जारी रखी। इसके बाद विमान अपहरण की घटना हुई, फिर भी हमने जनरल परवेज मुशर्रफ को आगरा आने का निमंत्रण दिया। (शेष पृष्ठ 2 पर)

कश्मीर पर रूस जैसा...

अफगानिस्तान में भारत की भूमिका भी हो : भारतीय पत्रकारों से बातचीत करते हुए वाजपेयी ने कहा कि रूसी राष्ट्रपति से हुई वार्ताओं से भारत और रूस के बीच द्विपक्षीय संबंध सुदृढ़ होने के अलावा अंतरराष्ट्रीय मसलों पर संयुक्त रूप से काम करने पर सहमति हुई है। दुनिया की बदली हुई परिस्थितियों के कारण इन वार्ताओं में अफगानिस्तान मुख्य मुद्दा बन गया। रूसी राष्ट्रपति इस बात से सहमत हैं कि अफगानिस्तान में नया राजनीतिक ढांचा बनने पर भारत की भूमिका भी रहनी चाहिए। इस मुद्दे को अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज बुश के साथ होने वाली

पेज एक का शेष

बातचीत में भी उठाया जाएगा। आतंकवाद के मुद्दे पर रूस की भी राय यही है कि इस संघर्ष में दोहरे मानदंड नहीं अपनाए जाने चाहिए। **केवल बमबारी से लड़ाई जीती नहीं जा सकती :** अफगानिस्तान में चल रही बमबारी के संबंध में भारत और रूस की राय के प्रश्न के उत्तर में प्रधानमंत्री ने बताया कि अभी हो रही बमबारी की रणनीति पर सभी सहमत हैं, लेकिन सबकी एक राय है कि केवल बमबारी से